P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-1* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

मुआवज़े : वर्तमान राजनीति का पर्दाफाश

हबीब खान
सहायक आचार्य एवं
विभागाध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
राज. बाँगड. महाविद्यालय,
डीडवाना, राजस्थान, भारत

सारांश

मार्क्सवादी चिन्तन को मानवतावादी दृष्टिकोण से जोड़कर उसे जन–जन तक पहुँचाने वालों में शीर्षस्थ स्थान भीष्म साहनी का है। उन्होंने सहज मानवीय अनुभूतियों और तत्कालीन जीवन के अन्तर्द्वन्द्व को अपनी रचना का विषय बनाकर व्यवस्था की विकृतियों की पोल खोल दी है। मुआवजे में धर्म–राजनीति–प्रशासन और जनता के विभिन्न घटकों की लूटखसोट वृत्ति का नंगा नाच हैं। प्रशासन की सत्ता का काँइया स्वरूप है जो व्यवस्था में अपनी पकड़ बनाकर गुंजायमान है। गुण्डाराज की सत्ता में शासन और प्रशासन सब दंगे की आशंका या दंगे का इन्तजार कर रहे हैं और सबका केन्द्र बनता है मुआवजा। सभी अपनी–अपनी फिराक में है कि दंगे से किसको क्या हासिल हो सकता है,वे मुआवजे से वंचित न रह जाये इसलिए सब तैयार और सजग हो रहे हैं।

राज की सत्ता का यह दस्तूर बन गया है कि व्यवस्था बिगड़ जाने पर घड़ियाली आँसू बहाकर पीड़ितों को सांत्वना का मरहम लगा दी जाये। व्यवस्था में दलाल पैदा हो गए हैं। सरकार में गुमास्ता है जो इधर की खबर उधर करते हैं। दंगा रोकने का प्रयास किया जाना था उसके बजाय मुआवज़े की व्यवस्था हो रही है। कितनी विडम्बना है कि दंगे जैसे हादसे में किसी की मृत्यु का कोई शोक नहीं हैं।दंगा प्रायोजित होता है और मुआवजा भी नियोजित है। मृत्यु भी बनाई जा रही है और मरना भुनाया जा रहा है। यही आज के समय की तस्वीर है। मुआवजे का खजाना गुण्डा लूट लेता है जिसकी खबर प्रशासन और सरकार को नहीं है। गुण्डा खजाना लूट कर जनता मे बाँट रहा है। प्रशासन है कि दानवीर समझकर गुण्डा की रक्षा कर रहा है। क्या इसके बाद भी सामाजिक सुरक्षा और संवेदनशीलता का कोई आयाम बचता है? इनकी पड़ताल करता यह मुआवजे नाटक वर्तमान की तस्वीर पेश करता है, जिसमें शासकों की विवेकहीनता,अलगाव,मध्यमवर्गीय लोगों की अकर्मण्यता और गरीबों की त्रस्त मानसिकता से उभरे मानवीय मूल्यों के क्षरण से उभरी चिन्ता का पुरालेख है।

मुख्य शब्द : लूटखसोट, गुण्डाराज, घड़ियाली आँसू, मरहम, नियोजित, सामाजिक चेतना, त्रस्त मानसिकता।

प्रस्तावना

हिन्दी नाट्य साहित्य में भीष्म साहनी ऐसे संवेदनशील रचनाकार हैं जिनके लेखन में सामाजिक दायित्व बोध के साथ समाज की बदलती तस्वीर को पहचानने की क्षमता है। उनकी आत्मीयता कमजोर,शोषित,स्त्री और मजबूर लोगों के पक्ष में सघन होकर उभरी है। उनकी रचनाएँ मानवता के पक्ष में खड़े रचनाकार के दस्तावेज है जो आमजन के मन और दिल को पिघला देती है। राजनीति समाज और वर्तमान समाज से जुड़े प्रश्नों और चुनौतियों से टकराकर उनकी कलम इन्सानियत का आईना दिखाने वाली है। उनके नाटक समाज के संघर्षो,विकृतियों,विडम्बनाओं और कड़वाहटों की कलई खोल देने वाले हैं। जैसा जीवन जिया,जिन संघर्षों को झेला, उसी का यथावत चित्रण अपनी रचनाओं में करना रचना कर्म और जीवन धर्म के अभेद को साबित करता है।

अध्ययन का उद्देश्य

साम्प्रदायिक संकीर्णता और अवसरवादी एवं खोखली व्यवस्था के परिणामस्वरूप उपजे दूषित और भ्रष्ट वातावरण में जी रहे समाज को सचेत करने के लिए मुआवजे नाटक की रचना हुई। यह नाटक वर्तमान व्यवस्था की विसंगतियों और विडम्बनाओं को अनावृत करता है। यह विडम्बना ही तो है कि एक जीता जागता व्यक्ति मुआवजे के लिए लाश हो जाने को तैयार है। यह नाटक व्यवस्था के विकृत रूप और भविष्य की निराशाजनक स्थितियों के प्रति सचेत करता है।

शोध प्रविधि

भीष्म साहनी की विचारधारा और लिखित साहित्य का अध्ययन कर विषय से सम्बन्धित सामग्री का संकलन कर विवेचानात्मक प्रविधि द्वारा रचे विमर्श को वर्तमान के साथ जोड़कर पात्रों की मानसिकता को समझने का प्रयास किया गया है। नाटक वर्तमान समाज को उपस्थित करने में सक्षम है।

साहित्यावलोकन

भीष्म साहनी के साहित्य को पुनरूत्थानवाद के विरूद्ध नवजागरण के नए उभार के रूप में देखा जा सकता है। भीष्म साहनी की रचनाओं में सामाजिक अन्तर्विरोध पूरी तरह से उभर कर आया है। राजनीतिक मतवाद के आरोप से दूर भीष्म साहनी भारतीय राजनीति में निरन्तर बढ़ते भ्रष्टाचार, नेताओं की पाखण्डी प्रवृत्ति, चुनावों की भ्रष्ट प्रणाली, राजनीति में धर्म का धुव्रीकरण, जातिवाद का दुरुपयोग, नैतिक मूल्यों का ह्रास, शोषण की षड्यंत्रकारी परियोजना और राजनीतिक आदर्शों के खोखलेपन का चित्रण प्रामाणिकता तथा तटस्थता के साथ किया है।भीष्म साहनी के नाटक सामाजिक चेतना सम्पन्न सत्ता की कारस्तानियों में ही चलते हैं। ये सत्ताएँ भिन्न है परन्तु उनकी प्रवृत्ति और व्यवहार एकसा ही है। चाहे कबीरा खड़ा बजार में धर्म की हो या उससे पोषित राजा की हो या हानूश में राजा की हो या उसके सामानान्तर आश्रित चर्च की या माधवी में पुरूष की–चाहे वह पुरूष राजा हो, ऋषि हो या सन्यस्त हो या प्रेमी। लेखक ने भीष्म साहनी की पकड़ के सम्बन्ध में ठीक ही लिखा है, 'यानि मुख्तलिफ युगों एवं जीवन के मुख्तलिफ पक्षों में सत्तासीन शक्ति को पकड़ रखा है।'नाटककार भीष्म साहनी ने गोया व्यवस्था एवं समाज की काया की कमर ही पकड़ रखी है।'[1]सत्यदेव त्रिपाठी, भीष्म साहनी के नाटकों में सामाजिक चेतना।

मुआवजे नाटक का विवेचन

1993 में प्रकाशित यह नाटक भीष्म साहनी के पूर्ववर्ती नाटकों की अपेक्षा सर्वाधिक पात्रों (कुल 67) वाला नाटक है। यह नाटक 12 दृश्यों में विभाजित है। इस नाटक में कथ्य की अपेक्षा तथ्यों की भरमार है। कथानक संक्षिप्त है। छोटी–छोटी घटनाओं से कथा तन्तुओं का ताना–बाना विकसित हुआ है। भीष्म साहनी का यह नाटक एम. के. रैना के निर्देशन में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की नाट्क मण्डली द्वारा खेला गया। यह नाटक दर्शकों में बहुत प्रसिद्ध हुआ और उनके द्वारा खूब सराहना की गई। स्वयं भीष्म साहनी ने लिखा है, 'मैं इसे ब्लैक कॉमेडी की संज्ञा देता था और इसके अनुरूप इसकी प्रस्तुति भी हुई।'[2] भाषा भी पात्रानुकूल है। यह नाटक भारत की राजनीतिक स्थिति पर करारा व्यंग्य है। सांप्रदायिक दंगे भड़कने की संभावना के बीच राजनेता, प्रशासन आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न लोग, अपराधी और नागरिक समाज सभी तनावपूर्ण स्थिति का सामना करते हैं। इस यथार्थ को आधार बनाकर इस नाटक को रचा गया है। यह नाटक गुण्डाराज राजनीति की वास्तविकता को हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है। एक अलग तेवर है जो कथ्य को धारधार बनाते हैं। मुआवजे का कथ्य वर्तमान व्यवस्था पर टिका है। राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी निभाने वाले भीष्म साहनी ने जिस राजनीति और समाज का सपना देखा था वह स्वाधीनता के वर्षों बाद तक साकार नहीं हो सका। देश की राजनीति में गुण्डों का प्रभुत्व इतना बढ़ जायेगा कि वे हमारे ऊपर राज करेंगें। ऐसी कल्पना के परे की बात थी। यह आज का सच है लेकिन और यह भी सच है कि हमारे राजनीतिक ढाँचे में अपराधियों के लिए पर्याप्त स्थान है। यह संभावना मौजूद है कि राजनेता विजय प्राप्त कर जनता का तिरस्कार कर सकते हैं और स्वयं पुरस्कार प्राप्त कर सकते हैं। नाटक में दिखाया गया है कि दंगा होने से पहले मुआवजे की तैयारी कर ली गई है, बस दंगा होने की देरी है। कमिश्नर टेलिफोन पर निर्देश देता दिखाया गया है, 'लगता है अबकी बार दंगा जबरदस्त होगा, इसलिए हमने सब इन्तजाम पहले ही कर लिया है। जख्मियों का इलाज, लाशें उठाने का काम, बेघर लोगों को राहत देने का काम, सब इन्तजाम पहले ही कर लिया है और जी!हाँ, मुआवजे का प्रबन्ध भी कर लिया है।'...उम्मीद है कि दंगा सोमवार तक हो जायेगा।'[3] दंगे की आड़ में मकान और जमीनों पर कब्जे करने वाले कितने सक्रिय हो रहे हैं गुमास्ता कहता है, 'हिन्दुओं के मुहल्ले में मुसलमान फँस जाये तो सौदा अच्छा हो जाता है।'[4] वर्तमान परिवेश में विकास की सारी संभावनाएँ भ्रष्टाचार में टटोली जा रही है। रिश्वतखोरी को मशीन का तेल माना जा रहा है। सुथरा ठीक ही कहता है, 'सबसे बड़ी ताकत बेइमानी में है।'[5]

साम्प्रदायिक दंगो के समय आमजन की सोच किस तरह की हो जाती है और दुकानदार किस प्रकार ग्राहक की मानसिकता बदल रहा है या आमजन को भड़का रहा है, 'यही तो हमारी कौम में कमजोरी है। लाखों बहा देगें, पर जब कौम पर खतरा मँडराने लगता है तो पैसे गिनते हैं।...दुश्मन ने अपने गोदाम हथियारों से भर लिए हैं और इधर आपको दाम की चिन्ता खाये जा रही है।'[6] नाटक का पात्र जग्गा दिहाड़ी पर लोगों की हत्या करने का काम करता है। वह हत्या करने को साफ–सुथरा धंधा मानता है और कहता है , 'हराम की कमाई हम नहीं खाते, बाबू जुबान देंगे तो काम पूरा करेंगे।'[7] जग्गा की सोच और मानसिकता का पता उसके इस कथन से लगाया जा सकता है, कि उसकी नजर में इन्सान की कीमत क्या है। 'कत्ल का काम शाही काम है। आदमी ऊपर चलता बने और हम घर को चलते बने। मामला मिनटों में खत्म।'[8] नाटक का पात्र दीनू दंगे में जख्मी होने पर अस्पताल में व्यवस्था के बारें में पूछता है, तो सुथरा उसे बताता है, 'हाँ मुफ्त में रोटी मिलती है। अस्पताल में मजे ही मजे है। खूबसूरत लड़कियाँ तेरी मरहम पट्टियाँ करेगी, सफेद लबादे पहने गोरी–गोरी नर्से, सिर पर सफेद टोपी।'[9]

राजनेताओं के सामने प्रशासन कितना मजबूर है किशनदास के पूछने पर कि आप गुण्डों को तो पकड़ सकते हैं। पुलिस कमिश्नर जवाब देता है, 'पकड़ सकते है, पकड़ा भी करते थे। पर एक गुण्डे को पकड़ो तो दस सियासदाँ तो उसकी जमानत के लिए पहुँच जाते है। फिर क्या मालूम आज जिसको गुण्डा समझ कर पकड़े, वह कल नेता बन जाये। आप पुलिस की दिक्कतों को भी समझा कीजिए।'[10]

राजनेताओं के दबाव में पुलिस स्वतंत्र रूप से कार्य नही कर सकती है। थाने के मालखाने के बक्से में जो मुआवजे के रूपये रखे गए हैं उसका ताला टूटा पड़ा है और बक्सा गायब है। यहाँ नेता और गुण्डा दोनों मिलकर एक हो जाते है। व्यवस्था पंगु हो जाती है। जग्गा जो नेता बन गया है, शांति द्वारा अपने पति की मौत का मुआवजा माँगने पर जग्गा की मानसिकता वर्तमान के नेता की मानसिकता से मेल खाती है, 'हमारे रहते इन्हें मुआवजे की क्या जरूरत है, दिलवा देंगे। मालामाल कर देंगे।'[11] जग्गा अपने भाषण में जनता से वादा करता है वोट देने पर वह उन्हें मुआवजा देता रहेगा। वह कहता है, 'अभी तो पाँच लाख निकाले है, फिर बीस लाख निकालूंगा,...एक झापर दूँगा अगले जहान में पहुँचा दूँगा।'[12] यह कैसा समाज है कि चोर ही व्यवस्था को कठघरे में खड़ा कर रहा है। चोर ही पुलिस थाने से रूपये चुरा कर मुजरिम नहीं पकड़े जाने के शोर मचा रहा है। जग्गा कहता है, 'दिन दहाड़े, पब्लिक के पाँच लाख रूपया चोर ले गया, किसी को पता नहीं चला ।'[13] प्रशासन भी जब चोर व्यवस्था में शामिल हो जाये तो फिर रक्षा करने वाला कौन ? जब रक्षक ही भक्षक बन जाये तो व्यवस्था को सुधारना नामुमकिन है। थानेदार जग्गा से कहता है, 'हमें आपकी सिक्यूरिटी के लिए भेजा है । आप बेफिक्र होकर भाषण दीजिए। हमारे रहते आपका कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता है ।'[14]

भीष्म साहनी ने मुआवजे नाटक में प्रशासक, राजनेता, सामान्य जन और गुण्डों की मानसिकता की शल्य चिकित्सा की है और अन्य नाटकों से हटकर ज्वलंत वर्तमान को उपस्थित कर दिया है । डॉक्टर सत्यदेव त्रिपाठी ने सही ही लिखा है, 'सभी रचनाकार उबते हैं और वार बेकार हो जाने का झटका खाकर नये औजार तलाशते हैं । इसी तलाश मे भीष्म साहनी ने पुराण साहित्य सब कुछ का पल्ला छोड़कर अपने समय में सीधे प्रवेश करते हैं और निकाल लाते हैं निचोड़ राजनीति और प्रशासन की सत्ता का और यहाँ तक की जनता की सत्ता भी।'[15] (भीष्म साहनी के नाटको मे सामाजिक चेतना)

मुआवज़े नाटक में विमर्श

भीष्म साहनी का नाटक मुआवजे आधुनिक संवेदना से जुड़ा दंगो की आशंकित हालात पर लिखा गया है। नाटक में विवेकहीनता, अलगाव, मध्यमवर्गीय लोगों की अकर्मण्यता और गरीबों की त्रस्त मानसिकता से उभरे मानवीय मूल्यों का क्षरण से उभरे विमर्श का दस्तावेज है। समग्र में यह नाटक विसंगतियों और विडम्बनाओं का पुरालेख, इंच–इंच रेंगता जीवन, और आधुनिक त्रासदी को व्यक्त करता ज्वलंत प्रमाण है।

एक बटन फैक्ट्री का मालिक नागरिकों के प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व करते हुए पुलिस कमिश्नर से आग्रह करता है कि वह दंगे की रोकथाम के लिए हरमुमकिन कोशिश करें और दूसरी ओर अपनी जाति विशेष की रक्षा के लिए अपने अनुज द्वारा हथियार इकट्ठा करने का बंदोबस्त करवाता है। वर्तमान राजनीति में ऐसा दोहरा चरित्र किसी से छिपा नहीं है। विचारों और कर्तव्यों के बीच की दरार इतनी मोटी हो गयी है कि अब तो हाथी के दाँत केवल खाने के रह गये हैं।जब सत्ताधारी राजनेता मॉब लिंचिंग और साम्प्रदायिक दंगो पर चुप्पी साध लेते है और अन्याय के विरूद्ध प्रतिरोध न कर मौन समर्थन कर नफरत को बढ़ावा देते हैं तो बड़ी भयावह स्थिति हो जाती है।

भीष्म साहनी साम्प्रदायिक दंगो को पूर्व नियोजित मानते हैं। नाटक में प्रशासन, राजनेता और गुण्डाराज की सत्ता का विमर्श रचते हैं तो उनकी दृष्टि जनता की बदलती मनोवृत्ति का भी गहराई से पड़ताल करती है। भोली समझी जाने वाली जनता अपने निजी स्वार्थों के लिए कितनी चालाकियाँ बुनती है और भोली जनता कितने भाले रखती है, इसका सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है।दंगा प्रजातंत्र में राजनीति चमकाने, चुनाव में उसकी फसल काटने, लूटखसोट करने का सुनहरा मौका देता है। उसका फायदा नेता, अफसर, व्यापारी दलाल और अपराधी पूरा उठाते है। साधारण जनता की चतुराई दिखाने के लिए नाटककार ने दीनू के साथ शांति के विवाह का प्रसंग रचा है।

मंत्री को अलग–अलग अवसरों पर अलग लिखित बयान चाहिए। पहला भावनात्मक,दूसरा मुआवजे के चर्चा वाला तथा तीसरा जनतंत्रात्मक मूल्यों–मान्यताओं–आदर्शवाला। यह अवसर अनुकूल भाषण जनता की मानसिकता पकड़कर नेताओं की स्वार्थ सिद्धि का साधन बनता है। भ्रष्टाचार की समाप्ति की दिलासा, निजी खातों में लाखों रूपये, हर नागरिक को घर का वादा और अन्य प्रलोभन जनता की भावनाओं से खेलना राजनेताओं का शगल बन गया है।राजनीति का मतलब जनता की भावना से छलावा,और भावनात्मक दोहन करना है। इसके अलावा इस नाटक में सिद्धान्तहीन भाषण लेखक,दंगो में मारकाट करने वाले पेशेवर,हथियार बेचकर पैसा कमाने वाले व्यापारी,मकान और जमीन खाली कराने वाले गुण्डे हैं। यह 21 वीं सदी की तस्वीर है जो मंगलग्रह और चाँद तक पहुँचने पर गौरवान्वित होती है।दीनू की पत्नी के साथ जग्गा का व्यवहार राजनेता की मानसिकता की पोल खोल देता है। उन्नाव रेप काण्ड उसी मानसिकता का अगला संस्करण है। मुआवजे के पैसे लूटकर जग्गा जनता के बीच पैसा बाँटकर लोकप्रियता हासिल करता है। ठेके पर हत्या करने वाला तथा सरकारी पैसा लूटने वाला जग्गा हमारे समय के राजनेता का प्रतिनिधि चरित्र है। जग्गा की पुलिस सुरक्षा और जनता में दानवीर की तस्वीर तथा जग्गा से जगन्नाथ चौधरी के रूप में प्रतिष्ठित होना एक लम्बी प्रक्रिया का परिणाम है।

एक राजनेता द्वारा रेप किए जाने पर पीड़िता की प्राथमिकी दर्ज नहीं हो पाती है। पिता की पुलिस सुरक्षा में मौत हो जाती है। परिवार को धमकी मिलती है। पीड़िता की शिकायत सर्वोच्च न्यायालय तक पहुँचने नहीं दी जाती है। यह कैसा प्रशासन और व्यवस्था वाला समाज है,जो एक जंगलराज की तस्वीर पेश करता है जिसमें हम जी रहे हैं प्रश्न है कि हम कितने सुरक्षित है? नाटक की घटनाओं को देखकर ऐसा लगता है कि दंगे उनके लिए सुनहरा अवसर लाने वाला है। वंचित समुदाय जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं और सुविधाओं से इतना वंचित है कि वे दंगो के भंयकर परिणाम पर विचार न कर

मुआवजे में सुखमय भविष्य टटोलने में लगे हैं।नाटक के आखिर में सरकारी खजाना लूट जाने का प्रसंग राजनीतिक विद्रूपता को चरम पर पहुँचा देता है। यहाँ नेता और गुण्डें एक हो जाते हैं। वे खजाने की रक्षा करने में असमर्थ है, जिन पर खजाने की रक्षा करने का भार है,वे सोये हुए हैं। लूटने वाला चौकन्ना और चालाक है, जो खजाना लूटकर ले जाता है। चौकीदार चोर नहीं है परन्तु चोरों की मदद करने वाला तो है। वर्तमान में भ्रष्टाचार और अनैतिकता समाज का स्वीकृत सत्य बन चुका है। कोई भी बिना विचार किए बहती गंगा में हाथ धोने को तत्पर रहता है। प्रशासन सुरक्षा व्यवस्था न कर मुआवजे की व्यवस्था करता है ताकि दंगे में मरनेवालों के परिवार जनों को मुआवजे की राशि देकर शांत किया जा सके। साम्प्रदायिक दंगों में किसी न किसी राजनेता का पीठ पर मदद का भरोसा रहता है जिसके बल पर दंगाई फितरत वाला आग का खेल खेल जाता है। कितना अच्छा होता है कि अपने थाने की परिसर में पुलिस अधिकारी दंगो के लिए पूर्ण जिम्मेदार होता।

वोट की राजनीति में समस्त नीतियों को अपनाकर शर्मनाक खेल खेलना आम बात हो गयी है जिस पर सामान्य लोग भी चर्चा नहीं करते और कहते है कि चुनावों में ऐसा ही होता है। मुआवज़े नाटक का विवेचन करने पर हमारे वर्तमान का नग्न यथार्थ सामने आता है। जिसमें पुलिस अपना काम दंगा शुरू होने के बाद मानती है। इसके अलावा डॉक्टर, दवा, कम्बल और अस्थायी स्कूल तक की व्यवस्था कर ली जाती है लेकिन दंगा रोकने की व्यवस्था नहीं की जाती है जिसका सब इंतजार करने बैठ जाते है। व्यापारी, पूँजीपति, गुण्डे, आम नागरिक अपनी स्वार्थ सिद्धि हेतु प्रतीक्षा में है। डॉ. नरनारायण राय ने कितना सही लिखा है, 'नाट्यवस्तु के इस साक्षात्कार से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि नाटककार का मूल उद्देश्य है देश की इस स्थिति का सामना करना,जिस स्थिति में आज हमारे सामने न कोई आदर्श रह गया है और न जीने की राह। सामान्य जनता की हालत दयनीय और चिन्तनीय है। उनका कोई सहारा नहीं रह गया है।'[16]

निष्कर्ष

भीष्म साहनी समाज की विसंगतियों और विडम्बनाओं को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। प्रेमचन्द की तरह वे ग्रामीण जीवन को तो नहीं पकड़ पाये परन्तु परिवेश की समग्रता में कथ्य और पात्र के अन्तः संबंधों में जनता के मुक्तगामी संघर्षों को रूपायित करने मे सफल रहे हैं। यह उन्हें प्रेमचन्द की परम्परा और विचारधारा के नजदीक पहुँचाता है। अपनी रचनाओं मे जहाँ जीवन के कटुतम यथार्थों का प्रामाणिक चित्रण किया है वहीं जनहित हेतु उचित आदर्श को भी रेखांकित किया है। अपने आदर्शो और कालजयी रचनाओं में वर्णित यथार्थ के कारण हिन्दी साहित्य के युगान्तकारी लेखक के रूप में स्मरणीय रहेंगे। डॉ. नामवर सिंह ने लिखा है, 'उन्होंने आने वाली पीढ़ी को साम्प्रदायिकता और साम्राज्यवाद से सावधान रहने की सलाह दी थी। आज उनके न रहने पर उनकी जो छवि उभरती है, वह प्रतिरोध का नायक जैसी है। प्रतिरोध का नायकत्व उनका कमाया हुआ सच है–उन का प्रभाव देश और दुनिया पर ऐसा ही बना रहेगा।'[17] वर्तमान समाज के लोगों की मानसिकता की कलई खोलता यह नाटक समाज को ऐसे लोगों की मानसिकता से सचेत करते हुए भविष्य की रणनीति का रास्ता प्रशस्त करता है। नाटक में विविध विमर्श आने वाले लेखकों के लिए मील का पत्थर हैं।

अब समय आ गया है जब न्यायपालिका, कार्यपालिका अपनी भूमिका के प्रति अधिक सचेत हो, साम्प्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने वालो के विरूद्ध कठोर कानून बनाये। भ्रष्टाचार और अनैतिकता के प्रति कठोर कदम उठाये। आमजन में प्रशासन और पुलिस के प्रति विश्वास कायम हो। यह केवल पारदर्शी कार्यपद्धति और न्याय से ही कायम हो सकती है। नाटक सामाजिक विकृतियों का पर्दाफाश कर भविष्य के लिए चेतना का रास्ता प्रशस्त करता है।

अंत टिप्पणी

1. *आलोचना पत्रिका (स. नामवर सिंह) अंक 17–18 (अप्रैल–सितम्बर) 2004 पृष्ठ 161*
2. *भीष्म साहनी, आज का अतीत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 2003, पृ.239*
3. *भीष्म साहनी, मुआवजे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ.11–22*
4. *भीष्म साहनी, मुआवजे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ. 20*
5. *भीष्म साहनी, मुआवजे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ. 29*
6. *भीष्म साहनी, मुआवजे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ. 34*
7. *भीष्म साहनी, मुआवजे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ. 38*
8. *भीष्म साहनी, मुआवजे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ. 39*
9. *भीष्म साहनी, मुआवजे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ. 50*
10. *भीष्म साहनी, मुआवजे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ. 59*
11. *भीष्म साहनी, मुआवजे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ. 92*
12. *भीष्म साहनी, मुआवजे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ. 94*
13. *भीष्म साहनी, मुआवजे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ. 95*
14. *भीष्म साहनी, मुआवजे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ. 96*
15. *आलोचना (स. नामवर सिंह) अंक 17–18 (अप्रैल–सितम्बर) 2004 पृ. 165*
16. *डॉ देवेन्द्र स्वामी, आधुनिक नाटक : दृष्टि एवं शिल्प,भावना प्रकाशन, दिल्ली, 2006 पृ. 48*
17. *आलोचना सं. (नामवर सिंह) अंक 17–18 (अप्रैल–सितम्बर) 2004 पृ. 04*